



SAMARTH 2021

**Annual Mass Awareness Campaign on Disaster Risk Reduction and
Building Resilience**

**Disaster Management Cell, Himachal Pradesh State Disaster Management Authority
Government of Himachal Pradesh**

Email id: sdma-hp@nic.in Phone: 0177-2880320
Toll Free No: 1070 (State), 1077 (Districts)

Background

- In the year 1989, the United Nations General Assembly designated **13 October** as **International Day for Disaster Risk Reduction (IDDRR)** to promote a global culture of disaster reduction, including disaster prevention, mitigation and preparedness
- It is an opportunity for all, including governments, local governments, community groups, civil society organisations, the private sector, international organisations and the UN family, to promote best practice at international, regional and national level across all sectors, to reduce disaster risk and disaster losses.
- The 2021 edition of the IDDRR focuses on **Target F of the Sendai Framework- Substantially enhance international cooperation to developing countries through adequate and sustainable support to complement their national actions for implementation of the present framework by 2030.**

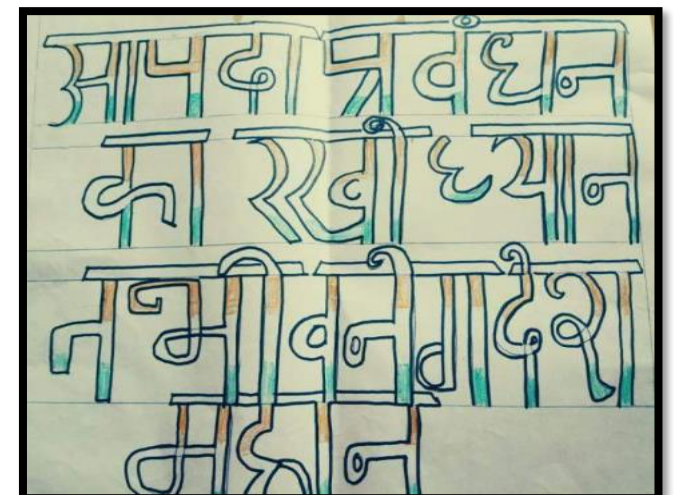
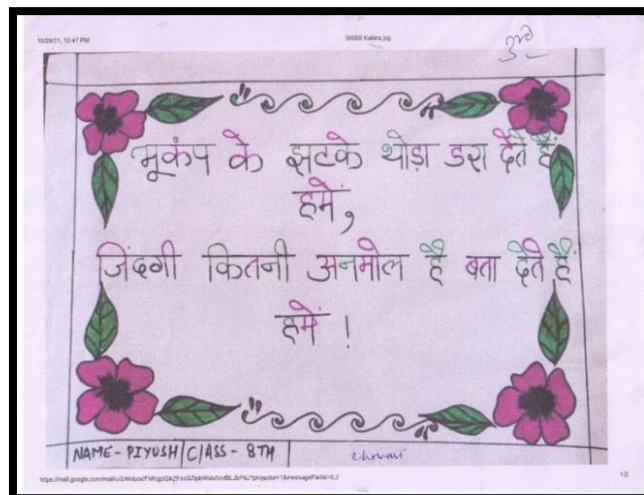
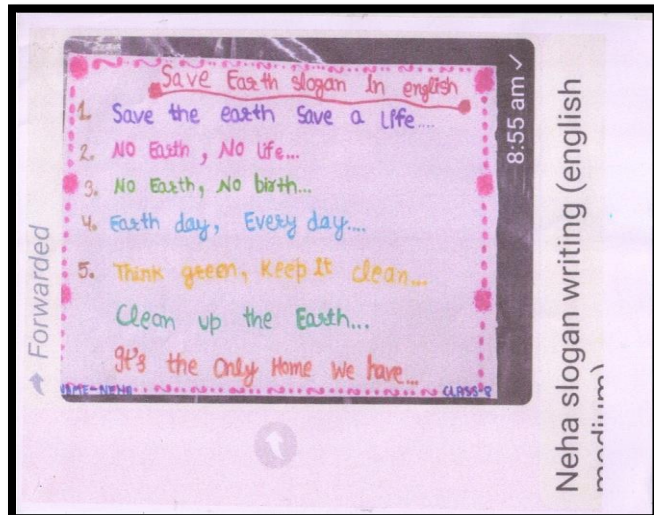
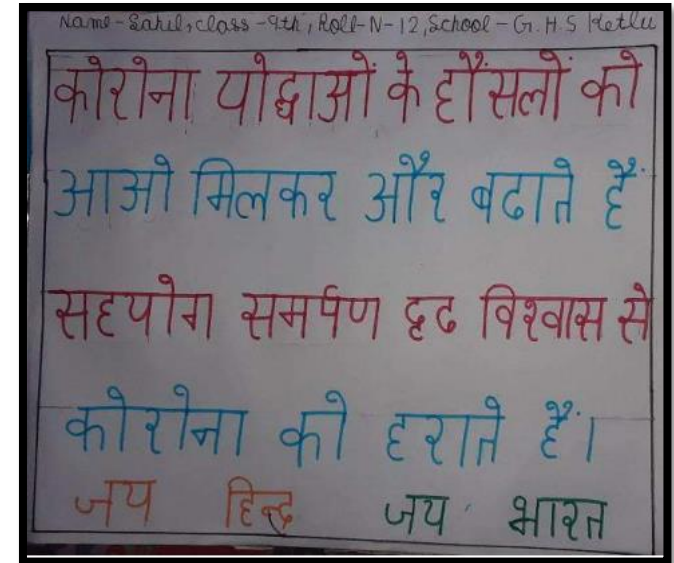
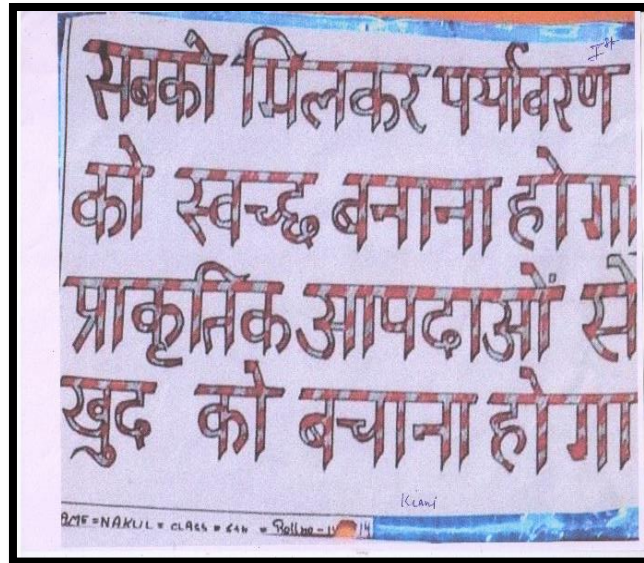
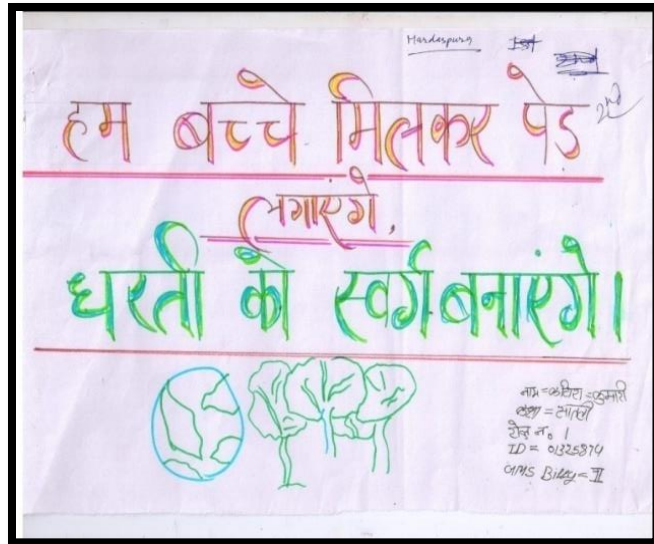
SAMARTH-2021

- As a symbol of solidarity with the global efforts to observe the celebrations related to the IDDRR, the Himachal Pradesh State Disaster Management Authority (HPSDMA) has been organizing an Annual Mass Awareness Campaign on Disaster Risk Reduction titled- '**Samarth**' since 2011.
- Within the limits of the Model Code of Conduct imposed due to elections, and the restrictions due to COVID-19 pandemic; this year the focus of IEC campaign was primarily on schools, where various district level competitions were organized focusing on various aspects of Disaster Risk Reduction and building resilience.
- The Departments of Elementary and Higher Education organized various competitions at school level. The HPSDMA provided funds to the tune of Rs. 2.00 lakh each, to the Departments of Elementary & Higher Education. All the District Disaster Management Authority(s) (DDMAs) actively supported the conduct and organization of these school level initiatives and programmes.


Glimpses of Various Competitions Organized at School Level during SAMARTH 2021



Slogan Writing Competition



IT'S HIGH TIME,
WAKE UP & SHAKE A LEG
OTHERWISE
GLOBAL WARMING WILL
TAKE YOUR
BREATH



Name: Anima Shama Roll no. 30
 Class: 9th Mob. 9805497358

We Cannot
Stop Natural
DISASTERS
But We Can
 Arm Ourselves with Knowledge:
So Many
 Lives Wouldn't
Have To BE
Lost If There
Was Enough
Disaster
PREPAREDNESS

Name - Gurnjan
 Class - 9th
 Roll no. - 17
 Phone no. - 9816869465
 School - Govt. Girls Sen.
 Sec. School Saranah.

जिंदगी बहुत कीसती
 है उसकी बचावो
 आपका के दौरान
 लीचो तक सड़क
 पहुँचावो

NAME - Archana Class - 9th G.S.S.S. T.H. Kandi

नाम: इशिता पसनिया कक्षा-9th अडक्रॉक-917 डी.एच. स्कूल विवादापर (वि.प्र.)

प्रकृति का न करें हरण,
 आओ बचाएँ पर्यावरण।
 हरीभरी पृथ्वी को नर्क न बनाएँ,
 चलो ग्लोबल वार्मिंग से इसे बचाए
 वृक्ष लगाने का करो निश्चय,
 ग्लोबल वार्मिंग का अंत है तय।

Climate change is the
 environment challenge of this
 generation and it is
 imperative that we
 act before it's too
 late

APS Bagshai
 Hannat Verma XI-Hum

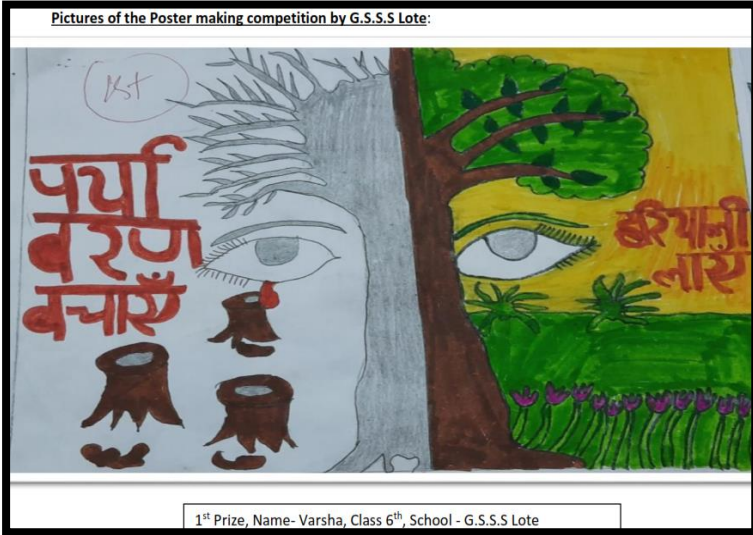
SALU GIAN

भूकंप के झटके
 इश देते हैं, जिंदगी
 कितनी अनमोल है बता
 देती है
 हमें.

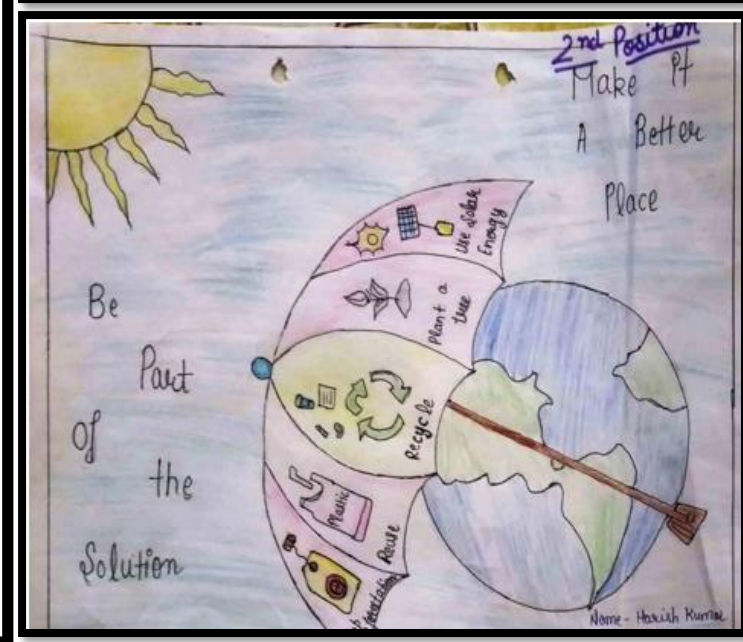
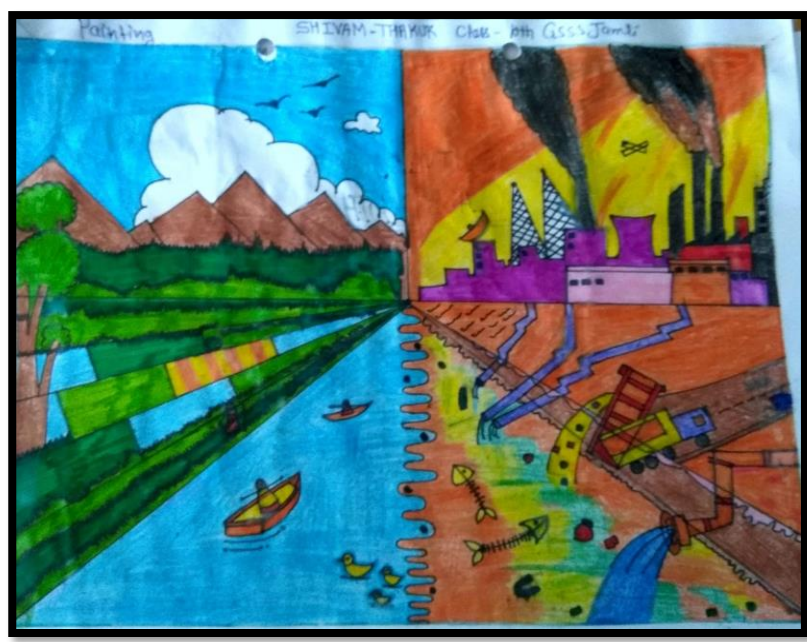


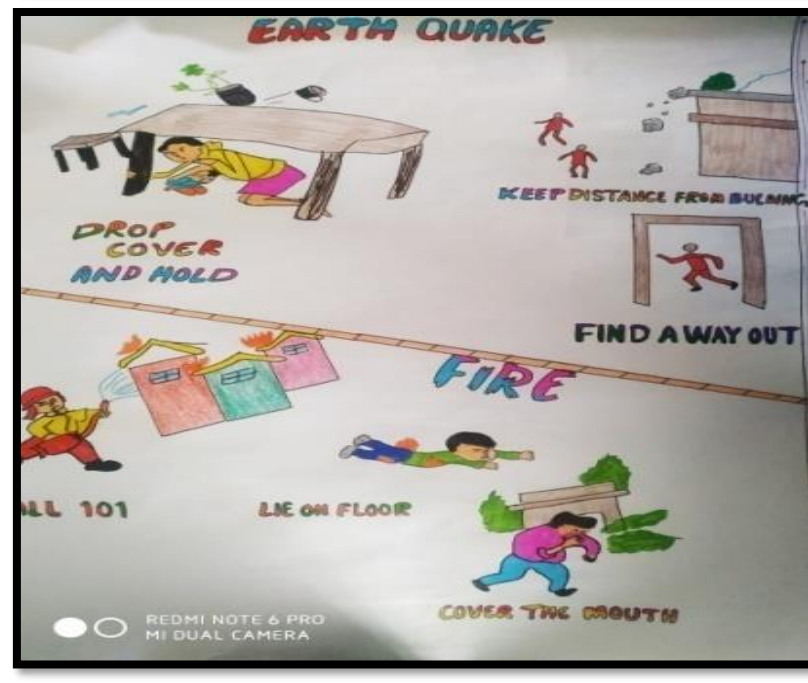
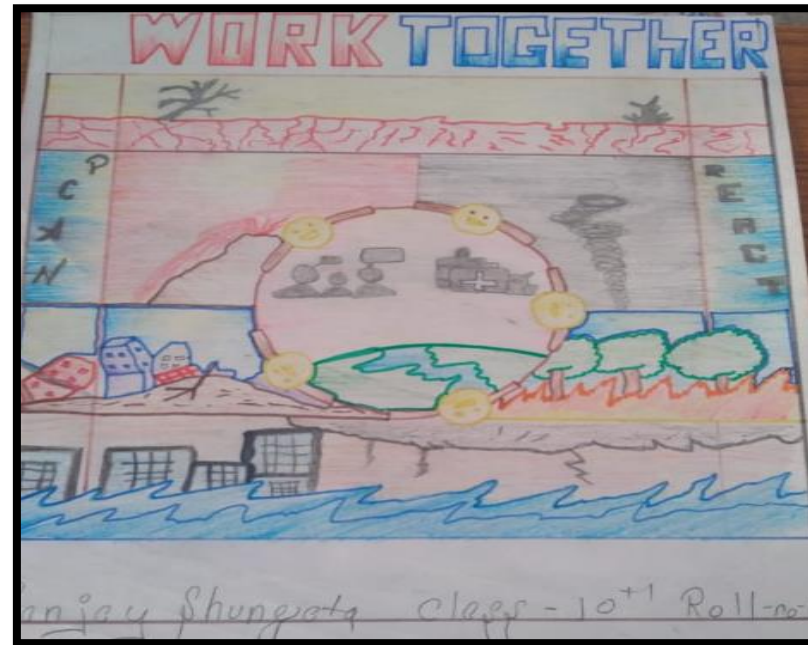
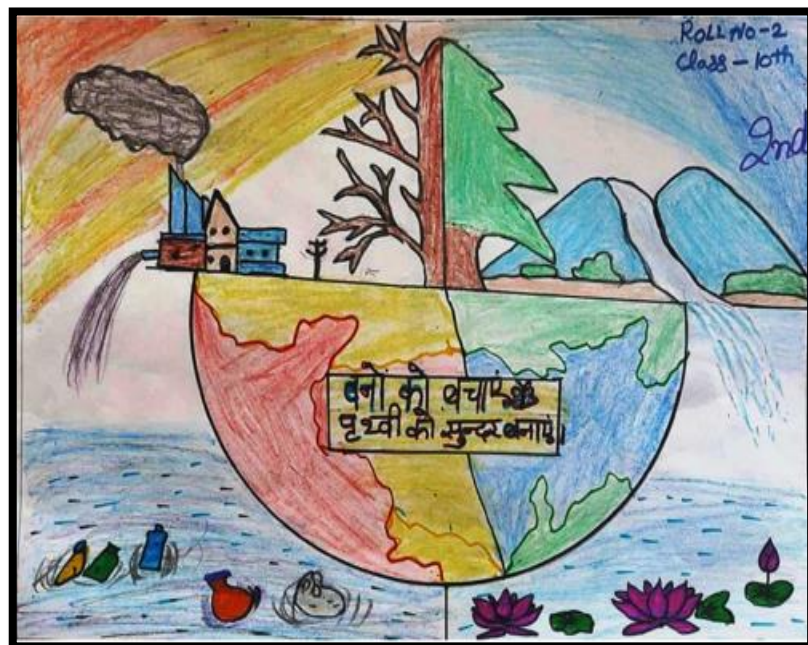
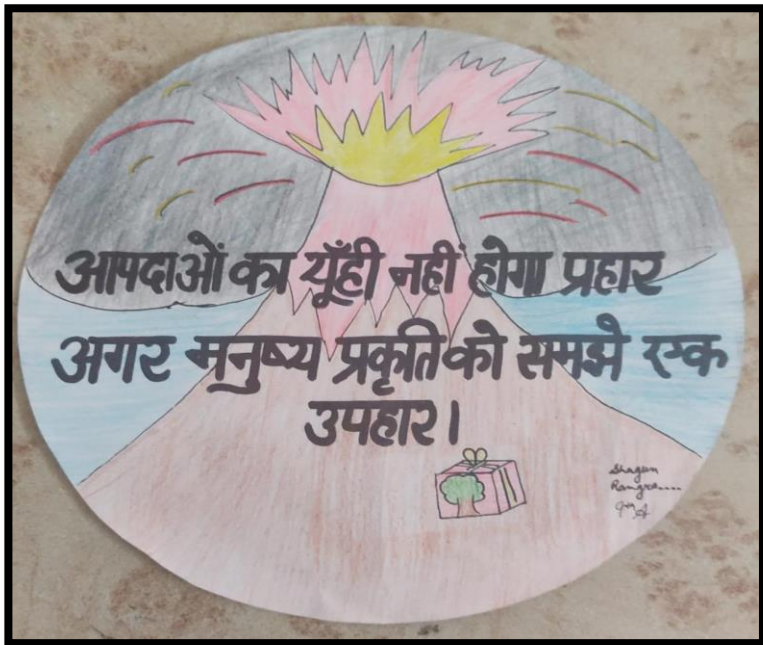
4th NAME - Kishik 12 1021

Pictures of the Poster making competition by G.S.S.S Lote:



Poster Making Competition





Essay Writing Competition

Essay

Topic

Page No. 1

Date 14 Oct 21

YOUVA

Emerging Concerns of our State

As we all know that Himachal Pradesh is renowned for its scenic beauty, which includes majestic snow-capped mountains, lush green forests, and gushing rivers and streams. Himachal Pradesh attracts visitors from all over the world with its exotic natural beauty, which includes charming peaks and spell-bound landscapes. Living in Himachal Pradesh is a blissful experience but people in all parts of the world face problems be it political, social, civil, natural or economical and Himachal Pradesh is no exception. Being a hilly state with varying terrains and climate, it faces many environmental and natural problems and recently there have been a lot of emerging concerns about them. To start with, a major issue that has been affecting our state's environment are landslides. Landslides can overwhelm, and even pollute streams and waterbodies with excess sediment. In extreme cases they can dam streams and rivers, impacting both water quality and fish habitat. Landslides can wipe out large tracts of forest, destroy wildlife habitat, and remove productive soils from slopes.

Secondly, earthquakes can also severely damage the environment. Some people may think that it is not a problem but, Himachal Pradesh is one of the major earthquake zone of India. So the question rises that what would happen if this disaster took place. There are about sixteen dams in Himachal Pradesh and each dam stores millions of liters of water. What will happen if any of these dams collapsed? Are our cities well planned at enough distance from the water?

Last but not the least, another crucial factor that negatively impacts the climate are cloudbursts. Himachal Pradesh is a hilly state which frequently experiences cloudbursts during the south-west monsoon season. Cloudbursts cause flash floods. Flash floods in turn, uproot trees, trigger soil erosion, landslides and landslips leading to habitat destruction, and massive loss of property. Downstream, the floodwaters slow down and deposit large amounts of silt that may choke the mouth of water bodies and raise the riverbed.

In my opinion, these emerging concerns should be dealt with efficiently as they are capable of causing a lot of destruction.

Topic

Date

Page

Name :- Shivani Rana

Class :- 12 (Arts)

Roll No. :- 308

आपदा प्रबंधन निबंध

प्राकृतिक आपदा जो मानव जीवन से लेकर कई करों की संपत्ति का नुकसान करती है। इस क्षति से उभर पाना सरकार और प्रशासन के लिए मुश्किलों से भरा है। प्राकृतिक आपदाओं को रोकना और प्रभाव को नष्ट नहीं किया जा सकता है, मगर इससे होने वाले प्रतिकूल प्रभाव को रोकना संभव है। लोगों और जन जीवन को प्राकृतिक आपदाओं से रक्षा करने के लिए आपदा प्रबंधन जरूरी होता है। पर्यावरण को प्रभावित न करने के लिए प्राकृतिक आपदाओं से रक्षा के लिए सरकार और प्रशासन को चाहिए कि कभी ना खत्म होने वाले चोट दे जाते हैं।

प्राकृतिक आपदाओं जैसे: भूकम्प, बाढ़, सूखा-अकाल

जुबली में भीषण आग के कारण कई सम्पत्तियों का नुकसान होता है। सूखे बुरी तरह से दूर जाते हैं, पानी का टूटना, सूखे हदसे बढ़ने के कारण इमारतों का टूट जाना इत्यादि घटनाएं आपदाओं के कारण घटती हैं। इससे पर्यावरण और जलवायु प्रभावित होता है। आपदाओं के असर को कम करने और बर्ताने के जल्दी तरीकों को आपदा प्रबंधन कह जाते हैं। इसके लिए हम सबको सचेत रहना होगा। आपदाओं के नुकसान का अच्छी तरह से मुकाबला करना, संचार माध्यमों की मदद

Today

Topic

Date

Page

से ठीक करना, परिवहन और कृषि, सुगम रूप से जीवन प्रबंध और पानी संचयन के प्रबंध, बिजली, जल और जल को प्रभावित इलाकों में फिर से पुनर्स्थापना इत्यादि कार्य शामिल हैं।

आपदा होने से पूर्व सभी लोगों को चेतावनी दी जाती है। उसके अनुसार बचाव कार्य के लिए योजना भी बनायी जाती है। आपदा से पूर्व लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना और उनके सहायता करना आपदा प्रबंधन कार्य के अंतर्गत आता है। किसी भी तरह के जोखिमों को पकड़ने से ही आपदा प्रबंधन का परम कर्तव्य होता है। प्राकृतिक आपदाएं देश की उन्नति के लिए बाधक साबित होती हैं।

प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए वर्ष 2005 में देश की सरकार ने आपदा प्रबंधन अधिनियम जारी किया। सरकार ने आपदाओं से रक्षा के लिए नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ डिजास्टर मैनेजमेंट की स्थापना की है। सरकार आपदा प्रबंधन के तरीकों के विषय में स्थानीय लोगों को जागरूक कर रहा है। इस मिशन से कई युवा, समाज जैसे जनसामान्य, NDRF, IIMR, इत्यादि अपना जरूरी दायित्व निभा रहे हैं। सरकार को आपदाओं के असर को कम करने के उद्देश्य से पंड इत्यादि का आयोजन कर रहे हैं। अलग अलग संस्थान भी इसमें जुड़े हुए हैं।

बाढ़:- बाढ़ तब आता है जब जल स्रोत अत्यधिक बढ़ जाएं। बाढ़ का अधिक फिरोला धा बाढ़ का कारण है। नदियों में पानी का स्तर बढ़ता है जिससे बाढ़ आती है और कई क्षेत्रों को बुरी तरह से प्रभावित करती है। कई लोग दुकानें बंद जाते हैं और कई प्रकार

Today

Topic आपदा प्रबंधन पर निबंध Date 12

आपदा कैसे होती है। - आपदा एक ऐसी कार्य प्रणाली है जो आपदा से पहले और उसके बाद ही नहीं बल्कि एक दुर्घटना के समापन भी चलती रहती है। इस व्यवस्था में यह मानकर चला जा सकता है कि आपदा संभावित खतरों के भीतर आपदा की रोकथाम, उसके दुष्प्रभावों को कम करने की ज़रूरी कार्यवाही और सामान्य जीवन स्तर पर लौटने के कई उपाय होते हैं। मानव एवं प्राकृतिक कारणों से होने वाले दुष्प्रभाव यदि चरम सीमा तक पहुंच जायें तथा यह दुष्प्रभाव मानव एवं वस्तुओं के लिए असहनीय हो जायें और इसे दूर करने लगे तब परंपरा में बदलने लगेंगे।

प्राकृतिक आपदाओं को रोकना और समाप्त तो नहीं किया जा सकता। अगर इससे होने वाले आघात होने को रोकना नहीं जा सकता है, लोगों और जनजीवन की प्राकृतिक आपदाओं से रक्षा करने के लिए आपदा प्रबंधन जरूरी होता है। दुष्प्रभावों की अत्यधिक नुकसान प्राकृतिक आपदाएं पहुंचाती हैं।

आपदा के कारण - प्राकृतिक आपदाओं का कारण है। वर्तमान समय में सभ्यता में होने वाले नुकसानों के कारण जनसंख्या की मात्रा बढ़ रही है। जिससे कुछ स्थानों पर तो अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ आने की स्थिति पैदा होती है। जबकि कुछ स्थानों पर तो अत्यधिक सूखे का अभाव रूप बंधन को मिलता है। जिससे कि लोगों का जीना मुश्किल हो जाता है।

Teacher's Signature

Topic _____ Date 31

प्रभाव

सबसे कम विकसित देशों पर इन आपदाओं का गहरा प्रभाव पड़ता है। तथा ये वहाँ के जनजीवन के लिए बन सकती है। जबकि विकसित देशों में और महाम आर्थिकी वाले देशों में कुनिर्मादों पर इनका गहरा प्रभाव पड़ता है।

वैश्विक स्तर पर प्रतिवर्ष दुष्प्रभाव से मिलायम लोगों की मृत्यु होती है। परन्तु इस पर 43 कोषी विश्वीय दान नहीं दिया जाता। दुष्प्रभावों को अवशेषित करने वाली शीत ऋतु में ही को प्रभाव मौसमी घटनाओं पर पड़ता है। अतः इस और ही आर्थिक दायन केन्द्रित किया जाता है।

आपदा को रोकने के उपाय - उन जगहों की सूचनाएं करें जहाँ आप बाढ़ के समय पना ले सकते हैं और गाँवों शहरों पर जगह-जगह पर नाले का प्रबंध करे और इसे समय-2 पर साफ कर रटना होगा जिससे की बाढ़ की स्थिति ना बने। प्राकृतिक आघातों समाधान जैसे की वर्षा, आद्रशक्तियों और प्रवाल भूतियों का संरक्षण समुदायों को आपदाओं के लिए तैयार करने उससे सावधान करने और उनसे उबरने में मदद करता है। जिससे सूखे जैसे धीमी शुरुआत वाली घटनाओं भी शामिल है। वे अत्यधिक संबंधी आपदाओं जैसे भूकंप के बाद भूस्तरण की से होने वाले द्वितीयक प्रभावों को भी कम कर सकते हैं।

Teacher's Signature

Disaster Management

What do you mean by Disaster Management?

Disaster Management can be defined as the organization and management of resources and responsibilities for dealing with all humanitarian aspects of emergencies, in particular (preparation) preparedness, response and recovery in order to lessen the impact of disasters.

Types of Disasters :-

i) **Natural Disasters :-**

The disasters that are caused by nature are termed as natural disasters e.g., earthquake, cyclone etc.

ii) **Man-made Disasters :-**

The disasters which are caused as a result of human activities are termed as Man-Made Disasters e.g., Road accident, terrorist attack.

```

    graph TD
      A[Disasters] --> B[Natural Disasters]
      A --> C[Man-made disasters]
  
```

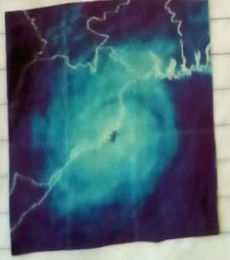
Teacher's Signature

ABOUT :-

- Natural disasters like earthquakes, tsunamis and volcanic eruptions happen without any warning.
- If the disaster is caused due to weather conditions like storms and floods then the measures for precautions could be taken.
- If the disasters appear to be more severe than it was predicted, nothing could be done to avoid its effects.
- Disaster management is done on the basis of the severity of the natural disaster.

Tsunami :-

Tsunamis are ocean waves triggered by: Large earthquakes that occur near or under the ocean. Volcanic eruptions. Submarine landslides. Onshore landslides in which large volumes of debris fall into the water.



Photography Competition

BUILDING CAPACITIES



PLANTATION



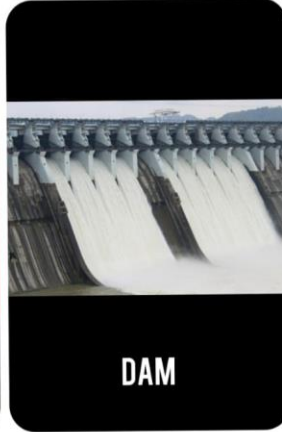
METALLED
ROADS



DISASTER
FREE
STRUCTURE



FIRE BOX



DAM



SUPPORTING
WALLS



Mock Drills and Awareness Generation Activities at Various Schools







Conclusion & Recommendations

- The HPSDMA and DDMAAs are committed towards organizing capacity building and awareness generation programmes at various levels.
- Addressing the vertical of School Safety thorough these capacity building initiatives is extremely important, as the safety and security of children is of utmost importance.
- In future, we may also organize competitions between DDMAAs, inviting their proposals for activities under 'Samarth' and may select the best districts based on outreach, execution and documentation efforts.
- Media coverage for 'Samarth' event will generate the much-needed awareness, hence this may also be encouraged in future capacity building events.